Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
7
2020
VOL. 178

Founder's Essay

स्वर्गीय माताजी को पुण्य का परिवर्तन

मेरी माताजी की पुण्य तिथि 22 जून है और मैं उनके और निवानो परिवार के पूर्वजों के लिए प्रत्येक महीने की 22 तारीख को एक मासिक स्मारक मनाता हूँ। जब मैं प्रचार कार्य में लगा था, साथ ही डेयरी स्टोर के लिए दूध बेचने का काम कर रहा था, तो मैं स्वयं से कहता, "आज मैं पुण्य परिवर्तन के लिए सूत्र पाठ करने का विशेष पुण्य कार्य करूँगा।" परन्तु सभी दिनों के इस दिन, मुझे हमेशा इस या उस सदस्य के कॉल आते रहते हैं और रात के मध्य तक सदस्यों के घरों में घूमते रहना होता है।

जब मैंने अपने शिक्षक सुकेनोबू अराई को इस बारे में बताया, तो उन्होंने कहा, "निवानो, पुण्य परिवर्तन सिर्फ सूत्र का पाठ करने तक सीमित नहीं है - पीड़ित लोगों को राहत पहुँचाते हुए शहर भर में दौड़ लगाकर पुण्य का परिवर्तन करना और भी मूल्यवान है। यह आपकी माताजी और पूर्वजों को अवश्य कितनी शांति और खुशी देगा!"

इन शब्दों के साथ, मेरे शिक्षक ने मुझे सिखाया कि अपने कार्यों से पुण्डरीक सूत्र के पाठ द्वारा दूसरों के दुःखों को दूर करना ही पुण्य परिवर्तन है। यह सुनने के बाद, मुझे ऐसा लगा कि अपनी माताजी का मुस्कुराता हुआ चेहरा हर दिन मेरे सामने आ जाता है, क्योंकि मैं खुशी-खुशी दूसरों के हित में काम कर रहा हूँ।

निक्कयो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी. 224-225

Living the Lotus
Vol. 178 (July 2020)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

अब आप क्या कर सकते हैं

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ

बोधिसत्व के रूप में, आप क्या आशा करते हैं और क्या करना है?

कवि दाकोत्सु इदा (1885–1962) की यह हाइकु कविता है: "मेरी धर्मनिष्ट माँ का अनुसरण कर, उल्लांबन समारोह में भाग लेना।" जापान में, हम बौद्ध आमतौर पर जुलाई में उल्लांबन समारोह (ओबोन) में शामिल होते हैं, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में पूरे परिवार का एक साथ धर्मकेंद्र या बौद्ध मंदिर जाना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

चूँकि हमें सिखाया जाता है कि बुद्ध का मन "सभी प्राणियों को मुक्त करने का मन है," हमारा मन केवल बीमारी से पीड़ित लोगों की ओर जाता है, जो बीमारी पुरे संसार में फैल रहा है और हम प्रार्थना करते हैं कि स्थिति जल्द से जल्द खत्म हो जाए। मुझे आशा है कि हम में से हर एक इस बारे में सोचेगा कि हम क्या कर सकते हैं और लगातार हर दिन इसे अभ्यास में लाना हैं।

यह मुझे पुण्डरीक सूत्र के 15 वें परिवर्त: "पृथ्वीविवरसमुद्गम" के असंख्य बोद्धिसत्वों की याद दिलाता है, जो पृथ्वी से निकलकर बुद्ध की देशना को सहा लोक में प्रचार प्रसार का संकल्प लेकर आए हैं और श्रद्धाविश्वास के अपने अभ्यास के माध्यम से सभी लोगों को मुक्त करायेंगे।

उन बोधिसत्वों का प्रतिनिधित्व चार बोधिसत्त्व महासत्त्व कर रहे थे, जिनका नाम था-- विशिष्ट चरित्र, अनन्त चरित्र, विशुद्ध चरित्र, एवं सुप्रतिष्ठ चरित्र, जो बोधिसत्त्व के चार महान चर्याओं के प्रतीक हैं, और जिनका वे बौद्ध मार्ग पर चलते हुए सबसे शीघ्र बुद्ध बनने की आकांक्षा रखते थे - दूसरे शब्दों में, जब कोई सर्वोच्च पद पर पहले पहुँने का प्रयास करता है, वह चार महान संकल्पों में से एक के साथ संरेखित करता है:

विशिष्ट अभ्यास: बुद्ध मार्ग सर्वोच्च है, मैं इसे निश्चित रूप से पूर्ण करूँगा (सर्वोच्च बुद्ध मार्ग प्राप्त करने का संकल्प लेता हूँ)।

अनन्त अभ्यास: बुद्ध की देशनाएँ अनन्त हैं, और मैं निश्चित रूप से उन सभी को सीखूंगा (धर्म के अनन्त प्रवेश द्वार की ओर बढ़ने का संकल्प लेता हूँ)।

विशुद्ध अभ्यास: हालाँकि मेरी भ्रान्तियाँ असंख्य हो सकती हैं, मैं निश्चित रूप से उन सभी को निर्मूल करुँगा (असंख्य भ्रान्तियों को दूर करने का संकल्प लेता हूँ)।

सुप्रतिष्ठ अभ्यास: हालाँकि जीवित प्राणी असंख्य हो सकते हैं, मैं निश्चित रूप से उन सभी को मुक्त करूँगा दूर करूँगा (असंख्य जीवित प्राणियों को मुक्त करने का संकल्प लेता हूँ)।

हालाँकि, ऐसा लगता है कि कुछ लोग इस बारे में स्पष्ट नहीं हैं कि इन चार संकल्पों में से प्रत्येक के साथ अपनी

जीवन शैली को सर्वोत्तम रूप से कैसे संरेखित किया जाए, और उन्हें दैनिक जीवन में कैसे व्यवहार में लाया जाए। जेन मास्टर ताइदो मात्सुबारा (1907–2009), ने बौद्ध धर्म को आसानी से सुगम शब्दों में समझने के लिए बोधिसत्व के चार महान संकल्पों को सम्पूर्ण जीवन में विश्वास के अभ्यास का पाठ रूप में व्याख्या की:

असंख्य जीवित प्राणियों को मुक्त करने का संकल्प: अपने आसपास के लोगों को सेवा (दान करना) देना है।

असंख्य भ्रान्तियों को निर्मूल करने का संकल्प: चलो अपने पैरों के आसपास में परे कचरे का एक टुकड़ा उठा लो।

धर्म के अनन्त प्रवेशद्वार पर पहुँचने का संकल्प: आइए एक दिन में एक सीख लें।

सर्वोच्च बुद्ध मार्ग को प्राप्त करने का संकल्प: अनन्त पथ पर कदम दर कदम बढ़ते चलें।

अभी, आप क्या उम्मीद कर रहे हैं? बौद्ध धर्म का अनुसार करनेवाले बोधिसत्व के रूप में आप हर दिन क्या करने की कोशिश कर रहे हैं?

अब अध्ययन और अभ्यास का अवसर है

जो लोग बोधिसत्व के चार महा संकल्पों का उल्लेख करते हैं, वे सोचने के तरीके के रूप में कि वे अब स्वयं क्या कर सकते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि जो लोग बुद्ध की देशना में विश्वास रखते हैं, उन्हें अभ्यास में लाने का दृढ़ संकल्प है। इसलिए, उनका बुद्ध जैसा ही मन है।

कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं, जो कहते हैं, "तो मुझे बताया गया है, लेकिन...." और हतोत्साहित महसूस कर सकते हैं। फिर भी, जब हम देशना को अपनाते हैं और महसूस करना आरंभ करते हैं कि हम बुद्ध की तरह बनना चाहते हैं, तो हम पहले से ही बुद्ध के मन:स्थिति के आत्मसाथ हो चुके हैं।

बुद्ध और हमें "एक समान" कहा जाता है। ऐसी भी कहावत है कि "सामान्य लोग और ऋषि तत्वत: समान हैं।" हम समझते हैं कि बुद्ध की देशनाएँ पवित्र हैं, क्योंकि उनमें लोगों को मुक्त करने की उनकी पवित्र इच्छा निहित है- एक ऐसी इच्छा जो हमारे पास भी है।

मनुष्य के रूप में प्राप्त जीवन का अर्थ है कि हममें भी वही भाव है, जो बुद्ध में है। यह मानना विश्वास है, जिसे हम भक्तिभाव से भरा मन भी कह सकते हैं।

इस अर्थ में, वैश्विक संकट के समय अच्छा अवसर है कि यह हमारे विश्वास की स्थिति को प्रतिबिंबित करता है, और हमारे दैनिक जीवन में देशनाओं के अध्ययन और अभ्यास को दोहराते रहने से, बोधिसत्व की जागरूकता को बढ़ाने का एक अच्छा अवसर हो सकता है।

संयोग से, "पृथ्वी के बाहर निकलना" में, वे जो पूर्वोक्त चार बोधिसत्व हैं, जिनका वर्णन ऐसे लोगों के रूप में हैं, जिन्हें "जीवित प्राणी देखकर आनन्दित होंगे।" दूसरे शब्दों में, ये वे हैं जिन्हें देखने की सभी लोग को लंबे समय से इच्छा हैं।

मेरे लिए भी, रिश्शो कोसेइ-काइ में मेरे वरिष्ठों और अन्य धार्मिक संगठनों के लोगों के बीच, ऐसे लोग हैं जो मुझे यह महसूस कराते हैं कि मुझे "उनका फिर से दर्शन पाने की बड़ी इच्छा है।" इन लोगों में सामान्य बातें कौन सी हैं? वे दृढ़ता से ईश्वर, बुद्ध, या अन्य देवताओं की पूजार्चना करते हैं, साथ ही और दु:ख संताप की गहराई में डूबे लोगों के प्रति संवेदना प्यार एवं दयाभाव से भरे होते हैं।

जैसा कि हम सर्वोच्च जागरुकता और सभी लोगों की मुक्ति की आकांक्षा रखते हैं, आइए हम हर दिन अध्यवसायी बने रहें।

From *Kosei*, July 2020

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः
प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र
अध्याय 16: तथागत का शाश्वत जीवन (2)

बुद्ध सदा विद्यमान एवं अविनाशी हैं

पूर्व किश्त के कुशल चिकित्सक के दृष्टांत में, किसी भी बीमारी की चिकित्सा करने में कुशल चिकित्सक शाक्यमुनि हैं और उनके बच्चे जिन्होंने अनायास ही जहर पी लिया था और पीड़ा से कराह रहे थे, जबकि पिता कार्य से उनसे दूर थे - साधारण मानव प्राणी का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसा कि दृष्टांत दिखा रहा है, जब तक कुशल पिता शाक्यमुनि लगातार पढ़ाने और निर्देश देने के लिए मौजूद थे, उनका सबकुछ सुचारु रूप से चल रहा था। लेकिन यह एक दु:खद तथ्य है कि जब कोई नेता चला जाता है, तो कई सामान्य अनुयायी, एक एक कर पूर्व की अवस्था में आ जाते हैं।

सामान्य व्यक्ति केवल वही मानता है, जो वह देख सकता है। शाक्यमुनि के परिनिर्वाण के उपरान्त, लोग मार्ग से भटकने लगे थे, भले ही शाक्यमुनि शाश्वत मूल बुद्ध के रूप में सदा विद्यमान और साथ थे। शाक्यमुनि इस सम्बन्ध चिंतित थे और कुशल चिकित्सक के दृष्टांत के माध्यम से, उन्होंने इस सच्चाई को स्पष्ट किया है कि बुद्ध सदा विद्यमान और साथ रहते हैं। वे अविनाशी हैं। यद्यपि नेता गुजर सकता है, लेकिन सत्य जो वह बतलाता है, बना रहता है, इससे अनुयायी दुख से मुक्त हो सकता है।

जैसाकि बच्चों ने दृष्टान्त में किया और अपने पिता की अनुपस्थिति में अनजाने में विष खाकर स्वयं को विकट अवस्था में ले लाए, उसी तरह अन्य जीवित प्राणियों ने भी, बुद्ध की अनुपस्थिति में, स्वयं को विकट अवस्था में लाकर दु:खसंताप में खड़ा किया है।

जब दृष्टांत में पिता घर आया जाता है, यहाँ तक कि बच्चों को भी - जो लोगों की तरह विभिन्न सांसारिक इच्छाओं से बह गए थे - विष से अपनी इंद्रियों को खो दिया था, उसे फिर से देखकर बहुत खुश हुए। हालाँकि, कोई भी पथ से भटक सकता है, लेकिन व्यक्ति का बुद्ध स्वभाव अन्तर्निहित है।

धर्म के बारे में असहज महसूस करने का मनोविज्ञान

बुद्ध चिकित्सक पिता की तरह हैं, उन्होंने विभिन्न प्रकार की अमूल्य औषधियाँ तैयार की हैं - एक तरफ भ्रान्तियों को दूर करने के लिए, सच्चा ज्ञान प्राप्त कराने के लिए, दूसरों के प्रति समर्पण की भावना जगाने के लिए - औषधियाँ जो आम लोगों के स्वाद में आये।

कुछ लोगों ने बुद्ध की देशना को पहली बार में स्वीकार कर लिया और इस तरह से मुक्त हो गए, लेकिन अन्य लोगों ने ध्यान नहीं दिया और उनके लिए छोड़ी गई देशना को स्वीकार नहीं किया। अपनी इंद्रियों से विकल होने के कारण, उन्हें इसमें कोई खूबी नहीं मिली, औषधि की सुगंध को दुर्गंध और इसके रंग और स्वाद में कुछ विकृति मान लिया।

दृष्टांत के बच्चों की तरह, जो विष से गहरे प्रभावित थे, फिर भी उन्होंने औषधि को हाथ नहीं लगाया। उन लोगों ने बुद्ध की देशनाओं पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे विभिन्न सांसारिक इच्छाओं के सुख से प्रभावित थे। उनके लिए, बुद्ध की देशना विवशता लग रही थी, और उसे सुनने की इच्छा नहीं थी।

यह उथला मानव जाति का मार्ग है। तब, बुद्ध ने लोगों की आँखें खोलने के लिए एक असाधारण उपाय का सहारा लिया: दृष्टांत के पिता की तरह, उन्होंने स्वयं को अन्तर्ध्यान दिलाया, जहाँ वे उनको कुछ समय के लिए नहीं देख सकें।

बुद्ध के लिए इच्छा और प्यास

जब शाक्यमुनि ने परिनिर्वाण में प्रवेश किया, जो यह दिखलाता है, कि उनका अवसान हो गया, लोगों को अचानक अकेला छोड़ दिया और उनके मन में उनके प्रति एक महान नायक के रूप में समर्पण की भावना पैदा हुई। एक प्यासे व्यक्ति के पानी के लिए व्यग्रता की तरह, उनमें बुद्ध के तलाश की भावना से उमड़ आयी।

सूत्र के पद्य भाग में, इस विचार को कामना और प्यास के रूप में व्यक्त किया गया है। कामना या प्यास के इस तीव्र अहसास के आते ही लोगों ने अपनी इन्द्रियों को मजबूत किया है, उनका हृदय उल्लास से भरा है। वे जागते हैं, उस समय, उन्हें एहसास होता है कि उन्हें कुछ करना होगा। यह तब होता है जब वे उनकी छोड़ी गई देशना (औषध) के लिए छलांग लगाते हैं और स्वेच्छा से स्वीकारते हैं।

यह कामना और प्यास मात्र दृश्यमान बुद्ध ही नहीं है; इसमें अधिक सामान्य या सार अर्थ है। अक्सर ऐसा होता है कि जिन लोगों में देवताओं या बुद्धों की ओर कोई झुकाव नहीं है, जो हमेशा दैनिक जीवन के मामलों में रूचि रखते हैं, वे अचानक आयी संकट का सामना करते हैं। इस बिंदु पर, उनमें से कई को कुछ दुबला होने की आवश्यकता महसूस होती है। ऐसे लोग भी हो सकते हैं, जिनके पास पर्याप्त भौतिक चीजें हैं जो अभी तक अप्रभावित हैं; वे आश्चर्य करते हैं कि क्या ऐसा कुछ नहीं है जो आत्मा को संतुष्टि दे सकता है।

ऐसे लोग क्या खोज रहे हैं, क्या वे इसे जानते हैं या नहीं, कुछ भगवान या बुद्ध हैं: कुछ झुकना, या कुछ ऐसा जो आत्मा को संतुष्टि दे सकता है। यही कारण है कि या तो ऐतिहासिक बुद्ध या बुद्ध जिनका सार है, वे सेवा करेंगे। महत्वपूर्ण बात, अगर किसी की आत्मा को शुद्ध करना है, यदि किसी को पहुँचाना है, तो वह है जो वास्तव में उद्धार ला सकता है, और इसके लिए लंबे समय तक प्यास से पीड़ित व्यक्ति की तीव्रता है।

इस बिंदु में, धर्म दर्शन और नैतिकता के सिद्धान्तों से अलग है। दर्शन और नैतिकता की बारीकियों को मन से, या कम से कम मन की उपरी सतह पर समझना काफी आसान हैं। और यदि हर कोई उन्हें इस तरह समझ सकता है और तदनुसार काम कर सकता है, तो कोई समस्या नहीं होगी। लेकिन भले ही मन की सतह पर बहुत कुछ जाना जा सकता है, लेकिन मन की कोटरिका में छिपी भावनायें

आसानी से नहीं दूर होती हैं। लोग अनजाने ही उन भावनाओं में भटक जाते हैं और परिणामस्वरूप, बुरे कार्य करते हैं। यही कारण है कि मन में दबी भावनाओं को दूर करना चाहिए, क्योंकि इनको दूर किए बिना कोई उद्धार नहीं हो सकता है। धर्म और विश्वास हमें अपने मन को अपनी गहराई से बदलने में सक्षम बनाते हैं। यह इस अध्याय का एक पाठ है।

हम बुद्ध को देख सकते हैं, यदि हम जागृत हैं

दृष्टांत में, बच्चे जागृत हुए जब वे अपने पिता की कामना और प्यास से व्यग्र हो गए। जब उन्हें होश आया, उनके पिता घर लौट आए थे। सामान्य शब्दों में, इसका आशय है कि सभी प्राणी, यदि वे मात्र सतर्क हैं, तो यह जान लेंगे, बुद्ध सदा पास हैं।

बुद्ध सदैव साथ हैं और चिरस्थायी होते हैं, और एक पल के लिए भी वे हमसे अलग नहीं हैं। ऐसा सोचना कि वे हमारे पास हैं, गलत है, नहीं, हमारे पास में नहीं, - बल्कि, बुद्ध हमारे भीतर और आसपास विद्यमान है। हम बुद्ध के साथ एक हैं।

इस प्रकार, यदि ऐसा प्रतीत होता है कि, बुद्ध विद्यमान नहीं हैं, तो यह केवल इसलिए है कि हम उनकी उपस्थिति को भूल गए हैं या खो दिया है। मानव प्राणी को पाँच इंद्रियों से वास्तव में जो कुछ नहीं दीखता है, उसमें उनकी रुचि नहीं होती है; हम अपनी पाँच इंद्रियों से हवा, सूरज, या पानी को भी ठीक से महसूस नहीं कर

सकते हैं। केवल जब कोई संकट आता है, विशेष रूप से तब जब किसी चीज की उत्कट इच्छा होती है, क्या हम याद रखते हैं कि वह चीज कितनी कीमति है।

हम बुद्ध के साथ भी यही गलती करते हैं। बुद्ध का परमार्थ स्वरूप शाश्वत आदि बुद्ध है, जिनसे समस्त पदार्थों का अस्तित्व है। इसलिए, बुद्ध के अनुसार जीने का अर्थ है, मन का विरक्त होना और हमेशा खुशी से भरा रहना है। लेकिन हम अक्सर इसे भूल जाते हैं और उलटा कार्य करते हैं, केवल स्वयं को दु:खी बनाता है।

ऐसी जागरूकता कि हमारा अस्तित्व बुद्ध से है

यदि हममें गहन जागरूकता है कि हमारा अस्तित्व शाश्वत आदि बुद्ध से है, तो जीने का सही तरीका शाक्यमुनि की देशनाओं के अनुसार जीना है, जो शाश्वत आदि बुद्ध का सत्य है। यदि हमारा जीवन शाक्यमुनि की देशनाओं के अनुसार है, तो हम चाहे जितने भी परीक्षणों से गुज़रें, यह ऐसा ही होगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं, और हम सबसे बड़े आत्मविश्वास के साथ रहेंगे। यह एक सद्पुरुष के रूप में जीने का सही तरीका है, और यह इस अध्याय की महान शिक्षा है।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्र: प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.163-70.

हम क्या कर सकते हैं

कोविद -19 महामारी, एक ऐसी स्थिति है, जिसके सम्बन्ध शायद ही हममें से किसी ने कल्पना की है। यह हमें ऐसे युग में लाती है, जब हमें अवश्य एक नयी जीवन शैली अपनानी है - एक नया आदर्श।

इस कष्टदायी समय में, पुण्डरीक सूत्र के अनुयायियों के रूप में हमारे सबके पास सामान्य कामना है कि अपनी धर्मदेशना को अधिक से अधिक लोगों के साथ साझा करें। हमारी कामना के अनुरूप, प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने इस महीने के लिए अपना संदेश दिया है, जिसका शीर्षक है, "अब आप क्या कर सकते हैं।"

प्रेसिडेण्ट निवानो ने पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-15: "पृथ्वीविवरसमुद्गम" के संदर्भ का उल्लेख किया है और हमसे पूछते हैं कि हम किस चीज के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, हम क्या करने की कामना कर रहे हैं, और किस तरह से अपने जीवन का निर्वहण कर रहे हैं। बोधिसत्व के चार महासंकल्पों में वर्णित मार्ग का अभ्यास करे रहे हैं।

मैं आपके साथ प्रार्थना करता हूँ कि यह महामारी जल्द से जल्द समाप्त हो जाए, और लोक के सभी लोग मुक्त हो जाएँ और सुख और शांति पाएँ। इस धर्मदेशना को ध्यान में रखकर, मैं आशा करता हूँ कि हममें से हर कोई पुण्डरीक सूत्र की धर्मदेशना का अध्ययन जारी रखेगा, उसका दैनिक जीवन में अभ्यास करेगा, और बोधिसत्त्व होने के बारे में हमारी जागरूकता बढ़ाएगा।

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement

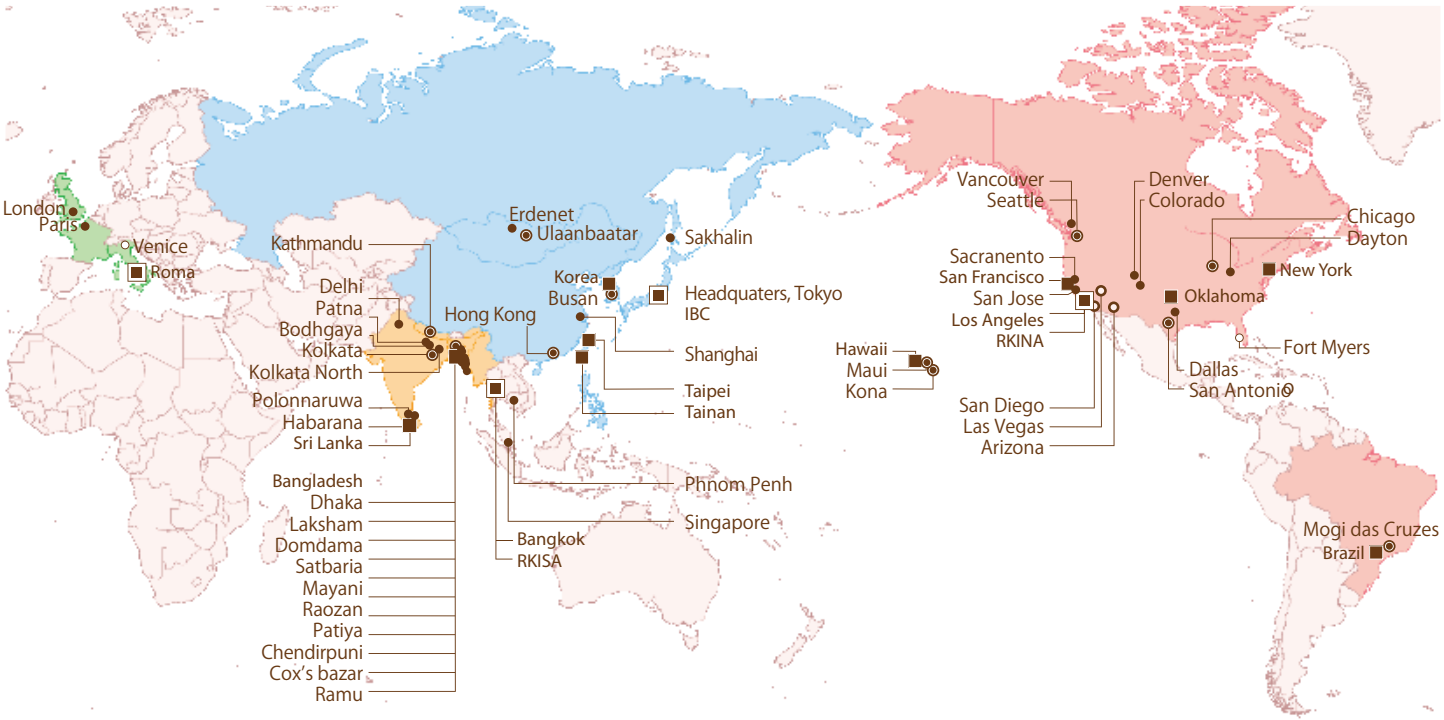

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
TEL: 1-808-455-3212FAX: 1-808-455-4633
Email: sangha@rkhawaii.org URL: http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
POBox 33636, CA 90033, USA
TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
Email: rk-la@sbcglobal.net URL: http://www.rkina.org/losangeles.html

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
TEL: 1-650-359-6951 Email: info@rksf.org
URL: http://www.rksf.org

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco
Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: http://rk-ny.org

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
TEL: 1-773-842-5654
Email: murakami4838@aol.com URL: http://rkchi.org

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
URL: http://www.rkftmyersbuddhism.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
Email: rkokdc@gmail.com URL: http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver
1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
URL: http://www.rkina-dayton.com

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
Email: info@rkina.org URL: http://www.rkina.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
(Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
Email: dharmasanantonio@gmail.com
URL: http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
Email: rkseattlewashington@gmail.com
URL: http://buddhistlearningcenter.org

Rissho Kosei-kai of Vancouver
Please contact RKINA

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
Email: risho@rkk.org.br URL: http://www.rkk.org.br

Facebook: https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil
Instagram: https://www.instagram.com/rkkbrasil

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓国立正佼成会
〒 04420 大韓民国 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓国立正佼成会釜山支部
〒 48460 大韓民国釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會
台湾台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大厦 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會
台湾台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Mayani
Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh
Rissho Kosei-kai Damdama
Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh
Rissho Kosei-kai Patiya
China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria
Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,
Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka
408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham
Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar
Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Rissho Kosei-kai Raozan
Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Paris
Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)
166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: http://www.ibc-rk.org

Published by Rissho Kosei-kai International